General Hindi

ध्वनी क्या है?
मुख से उच्चारित आवाज।

अक्षर : जिस ध्वनी का उच्चारण श्वांस के एक ही आघात में हो जाता है।

वर्ण : ध्वनी के लिखित रूप को वर्ण कहते है।

भाषा : भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है जिसकी लोकप्रियता के साथ हि मानव अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है।

हिन्दी देवनागरी लिपी मे है।
अंग्रेजी रोमन
पंजाबी गुरुमुखी
उर्दू फारसी

व्याकरण : भाषा को नियमो मे आबद्ध करना।

व्याकरण के भाग
- वर्ण विभाग
- शब्द विभाग
- वाक्य विभाग

हिन्दी वर्णमाला मे 52 वर्ण है
- 11 स्वर
- 39 व्यंजन
- 1 विसर्ग
- 1 अनुस्वार

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार : अं

विसर्ग : अः

अनुनासिक : अँ

व्यंजन : क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ श्र

ड़ ढ़

क्ष = क् + ष

त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ

श्र = श् + र

मूल स्वर : (ह्रस्व स्वर)

अ इ उ ऋ

अ + अ = आ

इ + इ = ई

उ + उ = ऊ

अ + ई = ए

अ + इ = ए

अ + ए = ऐ

अ + उ = ओ

ऋ + ऋ = ॠ

जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय या थोड़ा सा समय लगता है। एक मात्रीक होते हैं।

दिर्घ स्वर : आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

जिन स्वरों के उच्चारण मे मुल स्वरों के उच्चारण से अधिक समय लगता है।

आगत स्वर या ग्रहित स्वर : ऑ

प्लुत स्वर :

जिस स्वर के उच्चारण मे दिर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है।

e.g. ओ३म्

अनुनासीक स्वर :

जिस ध्वनी के उच्चारण मे नाक और मुह से हवा निकलती हो।

e.g. ऑ

संयुक्त स्वर :

अनुस्वार : नाक से ध्वनी

अयोगवाह : अं और अ। जो अ को साथ लेकर ~~चल~~ चलते हैं।

अल्पप्राण :

जिस ध्वनी के उच्चारण में हवा की मात्रा कम निकलती हो। कीसी भी वर्ग का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण।

e.g. क ख ग घ ङ

य र ल व और सभी स्वर

महाप्राण ध्वनी :

जिसके उच्चारण मे हवा की मात्रा अधिक निकले। किसी भी वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण और श ष स ह

सघोस ध्वनी : / घोष

जिस ध्वनी के उच्चारण मे स्वर तंत्रीयों में कंपन उत्पन्न होता हो। किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवा वर्ण।

य र ल व ह एवं सभी स्वर।

अघोस : जहाँ कंपन उत्पन्न न हो।

पहला और दूसरा वर्ण, श ष स। ~~एवं~~

उष्म व्यंजन : जहाँ उच्चारण में उष्मा उत्पन्न हो।

श ष स ह

स्पर्श : जिसके उच्चारण मे मुख अवयव का प्रयोग होता है।

अन्तस्थ : य र ल व

संधि : दो वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनी परिवर्तन संधि कहलाता है।

तीन प्रकार

- स्वर
- व्यंजन
- विसर्ग

स्वर संधि : ~~(आ, ई, ऊ)~~

अ + अ = आ

इ + इ = ई

उ + उ = ऊ

अ + आ = आ

आ + आ = आ

दिर्घ संधि : (आ, ई, ऊ)

युगांतर = युग + अंतर

दिव्यास्त्र = दिव्य + अस्त्र

राष्ट्राध्यक्ष = राष्ट्र + अध्यक्ष

उपाध्याय = उप + अध्याय

नैनाभिराम = नैना + अभिराम

देहातीत = देह + अतीत

शशांक = शशु + अंक

स्वाधिन = स्व + अधीन

अभयारण्य = अभय + अरण्य

अक्षांश = अक्ष + अंश

दिपावली = दिप + अवली

गीतांजली = गीता + अंजलि

प्रसंगानुकूल = प्रसंग + अनुकूल

ऊहापोह = ऊह + अपोह

विद्या = विद्या

जनार्दन = जन + अर्दन

भयानक = भय + आनक

शुभारम्भ = शुभ + आरम्भ

~~रवीन्द्र~~ = रवि + इन्द्र

रवीन्द्र

शचीन्द्र = शची + इन्द्र

प्रतीक्षा = प्रति + ईक्षा

~~परिक्षा~~ = ~~परि~~

परीक्षा = परि + ईक्षा

~~अति~~ अतीन्द्रिय = अति + इन्द्रिय

सतीश = सती + ईश

भानूदय = भानु + उदय

सूक्ति = सु + उक्ति

मधूर्जित = मधु + ऊर्जित

वधूत्सव = वधू + उत्सव

कटूक्ति = कटु + उक्ति

मधूर्मि = मधु + ऊर्जित

—

Correct word

सुधी, सती

शची

पति

पत्नी

श्रीमती

उपल → पत्थर

उत्पल → कमल

ऊर्मि

ऊष्मा

गुण संधि :

अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ऋ = अर्

उ → ो
ऊ → ौ
इ → ि
ई → ी

नर + ईश = नरेश
गण + ईश = गणेश
महा + ईश = महेश
~~देवर्षी~~ देवर्षि = देव + ऋषि
सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
महा + ऋषि = महर्षि
मनव + इन्द्र = मनवेन्द्र
सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र
बाल + इंदु = बालेंदु
एक + ईश्वर = एकेश्वर
न + इति = नेति
पुष्प + इन्द्र = पुष्पेन्द्र
दिन + ईश = दिनेश
~~गुड़ा + केश~~ = गुड़ाकेश
गुड़ाका + ईश

एक व्यंजन दो स्वरों से नहीं जुड़ता है।

म + ह् + आ + ई + श् + अ
ह् + ए + श
महे + श

द् + ए + व् + अ + ऋ + ष् + इ
देव + अर् + षि
देवर्षि ⇒ देवर्षि

पूर्णिमा से नया महिना start होता है।

चैत्र
वैशाख
ज्येष्ठ
आषाढ़
सावन
भादों
आश्विन
कार्तिक
मार्गशीर्ष
पौष
माघ
फाल्गुन

कृष्णपक्ष
↓
अमावस्या

शुक्लपक्ष
↓
पूर्णिमा

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा
सूर्य + उदय = सूर्योदय
ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि
अतिश्योक्ति = अतिशय + उक्ति

अतिशय + उ
य + अ + उ
य + ओ

ब् + र + म् + अ + ऋ + षि
म् + अर्
ब्रह्म + र्षि

वृद्धि संधि :

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

उपसर्ग
प्रत्यय
समास
संधि
are helpful to make words

एकैक = एक + एक

मतैक्य = मत + एक्य

हितैषी = हित + एषी

पुत्रैषणा = पुत्र + एषणा

वित्तैषणा = वित्त + एषणा

स्वैच्छिक = स्व + एच्छिक

लोकैषणा = लोक + एषणा

परमौजस्वी = परम + ओजस्वी

~~औद्योगिक = आ उद्योग + इक~~

प्रौद्योगिक = प्र + औद्योगिक
(प्रौद्योगिक)

वृद्धि संधि के अपवाद :

शुद्ध + ओदन = ~~शुद्धोदन~~ शुद्धोदन

अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ

दन्त + ओष्ठ = दंतोष्ठ

बिंब + ओष्ठ = बिंबोष्ठ

यण संधि :

इ / ई + अ = य
उ / ऊ + अ = व
ऋ + अ = र

इ/ई + आ = या
इ/ई + उ = यु
इ/ई + ऊ = यू
इ/ई + ए = ये
ऋ + आ = रा

अति + अधिक = अत्यधिक
मात + आला = मात्राला
अति + आचार = अत्याचार
नि + ऊन = न्यून
प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
देवी + आलय = देव्यालय
अति + अल्प = अत्यल्प
वि + अक्ति = व्यक्ति
वि + अस्त = व्यस्त
सु + आगत = स्वागत
मधु + आचार्य = मध्वाचार्य
सु + अच्छ = स्वच्छ
तनु + अंगी = तन्वंगी
मात + आनंद = मात्रानंद
मात + अनुमति = मात्रनुमति

अत + इ + अधिक
त + य

मात + आला
मात + ऋ + आ + ला
त + र + ला
त्रा + ला

न + इ + ऊ + न
यू

अयादि संधि :

औ + अ = आव
ए + अ = अय
ओ + अ = अव

ऐ + अ = आय
औ + इ = आवि
ऐ + इ = आयि

चे + अन = चयन
पो + अन = पवन
पौ + अन = पावन
भौ + अना = भावना
विनै + अक = विनायक
धौ + अक = धावक
हो + अन = हवन
भो + इष्य = भविष्य
धो + इका = धाविक
गै + अक = गायक

औ + इ = आवि

अ + ओ = औ

अ + अ + उ + इ
आ वि

व्यंजन संधि :-

पहले शब्द का अंतिम वर्ण व्यंजन होता है।

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

नियम :

1) यदी अघोष के बाद घोष आए तो अघोष घोष मे परिवर्तित हो जाता है।
(किसी भी वर्ग का पहला वर्ण अपने हि वर्ग के तीसरे वर्ण मे परिवर्तित हो जाता है।)

वाक् + ईश = वागीश

वाक् + ईश्वर = वागीश्वर

~~वाक्~~ वाक् + दान = वाग्दान

ऋक् + वेद = ऋग्वेद

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

सम्यक् + ज्ञान = सम्यग्ज्ञान

दिक् + विजय = दिग्विजय

जगत् + आचार्य = जगदाचार्य

जगत् + गुरु = जगद्गुरु

सत् + उपदेश = सदुपदेश

सत् + आनंद = सदानंद

~~श्रीमद~~ श्रीमत् + भागवत = श्रीमद्भागवत

षट् + यंत्र = षड्यंत्र

सत् + भावना = सद्भावना

सत् + आत्मा = सदात्मा

अप् + ज = अब्ज (कमल)

अप् + दी = अब्दी

दिक् + गयंद = दिग्गयंद

जगत् + अंबा = जगदंबा

सरस्वती ✗
सरस्वती ✓

चिन्ह ✗
चिह्न ✓

2) यदी द्वितीय शब्द के प्रारम्भ में पञ्चमाक्षर आने पर पहले शब्द का अंतिम वर्ण अपने हि वर्ग के पाँचवे वर्ण मे परिवर्तित हो जाता है।

वाक् + मय = वाङ्मय

दिक् + नाथ = दिङ्नाथ

चित् + मय = चिन्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

सत् + निधि = सान्निधि

वृहत् + नेत्र = वृहन्नेत्र (दूरदर्शी)

श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण

वृहत् + नल = वृहन्नल (अर्जुन)

वाक् + मूर्ति = वाङ्मूर्ति

3) वर्ग का तीसरा वर्ण अपने हि वर्ग के पहले वर्ण मे परिवर्तित होना।

[घोष के आगे अघोष आ रहा है तो वह अघोष बन रहा है]

उद् + तर = उत्तर

उद् + साह = उत्साह

उद् + फुल्ल = उत्फुल्ल

तद् + सम = तत्सम (उसके समान)

शरद् + काल = शरत्काल

आपद् + ति = आपत्ति

उद् + सर्ग = उत्सर्ग

उद् + तेजक = उत्तेजक

तद् + क्षण = तत्क्षण

4) 'म्' का अनुस्वार मे परिवर्तित होना।

प्रथम शब्द की अंतिम ध्वनी 'म्' हो तथा आगे कोई अन्य वर्ण आ जाए तो 'म्' अनुस्वार मे बदल जाता है।

सम् + सार = संसार

सम् + विधान = संविधान

सम् + संशोधन = संशोधन

शम् + कर = शंकर

सम् + यम = संयम

सम् + कर = संकर (दो प्रजाती को मिला कर एक बनाना)

ऋतम् + भरा = ऋतंभरा (आत्म विश्वास / सत्य से भरी हुई)

सम् + धि = संधि

सम् + ज्ञा = संज्ञा

विश्वम् + भर = विश्वंभर (विष्णु)

किम् + कर = किंकर (किम् कोई भी कार्य करने वाला)

व्यंजन आगम संधि →

'च्' का आगमन

'स्' का आगमन

'ष्' का आगमन

नियम :-

1) किसी स्वर के बाद यदी 'छ' आए तो 'च्' का आगमन हो जाता है।

स्व + छंद = स्वच्छंद

2) 'सम्' उपसर्ग के बाद 'कृ' धातु से बने शब्द आए तो 'स्' का आगमन होता है।

सम् + कृत = संस्कृत

सम् + कार = संस्कार

3) 'परि' उपसर्ग के बाद 'कृ' धातु से बन शब्द आने पर 'ष्' का आगमन होता है।

परि + कार = परिष्कार

उदाहरण :

छत्र + छाया = छत्रच्छाया

अनु + छन्द = अनुच्छंद

वि + छेद = विच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

तरु + छाया = तरुच्छाया

सम् + कृति = संस्कृति

सम् + करण = संस्करण

परि + कृति = परिष्कृति

आविष्कार (विसर्ग संधि)

अतिः + कार

व्यंजन लोप संधि :—

1) संस्कृत के कुछ शब्दो मे अंतिम 'न्' का लोप होकर संधियां बनती है।

राजन्

पक्षिण्

मंत्रिन्

स्वामिन्

प्राणिन्

आत्मन् + विश्वास = आत्म विश्वास

मत्रिन् + मंडल = मत्रिमंडल

प्राणिन् + विज्ञान = प्राणि विज्ञान

मत्रिन् + परिषद = मंत्रिपरिषद

शशिन् + कांत = शशिकांत

योगिन् + ईश्वर = योगीश्वर

प्राणिन् + मात्र = प्राणिमात्र

युवन् + आचार्य = युवाचार्य

राजन् + पुत्र = राजपुत्र

स्वामिन् + भक्त = स्वामिभक्त

मुर्धन्य व्यंजन संधि :

कुछ दन्तव्य ध्वनीयां मुर्धन्य में बदल जाति है।

स का ष मे परिवर्तन

~~अ~~ न का ण मे

त, थ का ट, ठ मे

वि + साद = विषाद

वि + सम = विषम

अभि + सेक = अभिषेक

प्रति + सेद = प्रतिषेद

परि + सद् = परिषद

सु + समा = सुषमा

सु + सुप्त = सुषुप्त

ऋ + न = ऋण

प्र + नेता = प्रणेता

प्र + नाम = प्रणाम

प्र + नय = प्रणय

तुष् + त = तुष्ट

इष् + त = इष्ट

~~पष् + थ = कष्ठ~~

कुष + थ = कुष्ठ

बलिष् + थ = बलिष्ठ

संतुष + त = संतुष्ट

Imp

जगत + अम्बा

जगदम्बा

जगन्नाथ

जगज्जननी

जगत + नाथ

जगत + जननी

इन तीनों में अलग-अलग संधि के नियम लगते हैं।

नोचदार व्यंजन संधि

प्रथम शब्द की अंतिम ध्वनी यदी 'त् / द्' है तो जिसके संपर्क में आते हैं उसी में परिवर्तीत हो जाते हैं।

त् → च
त् → छ
ज् → ज
त् → च
त् → छ

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

उत् + चारण = उच्चारण

सत् + चित् + आनंद = सच्चिदानंद

उत् + छेद = उच्छेद

जगत + जननी = जगज्जननी

भगवत् + ज्योति = भगवज्ज्योति

उत् + जयिनी = उज्जयिनी

उत् + शृंखल = उच्छृंखल

मृग् + शकटिका = मृच्छकटिका ← अपवाद ग् → च्
श → छ

~~उद्~~ उत् + हृत = उद्धृत

उत् + हरण = उद्धरण

पद् + हति = पद्धति

कृष् + न = ~~कृष्न~~ कृष्ण

नि + ष्ठुर = निष्ठुर

अनु + स्थान = अनुष्ठान

अधि + स्थाता = अधिष्ठाता

विसर्ग संधि :

① विसर्ग के पहले यदी 'अ' हो तथा विसर्ग के बाद भी 'अ' हो तो ~~अह~~ 'अः' 'ओ' बन जाता है। उसके आगे वाले 'अ' का लोप हो जाता है।

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

यशः + अभिलाषा = यशोभिलाषा

मनः + अभिराम = मनोभिराम

मनः + अनुसार = मनोनुसार

सः + अहम = सोहम

मनः

② विसर्ग के पहले यदी 'अ' हो तथा बाद मे 'अ' के अलावा कोई घोष ध्वनी आ जाए तो 'अः' ओ में परिवर्तित हो जाता है।

मनः + ज = मनोज
(जन्मने वाला)

सरः + ज = सरोज
(तालाब)

यशः + दा = यशोदा

शिरः + रेखा = शिरोरेखा

पुरः + धा = पुरोधा

मनः + विनोद = मनोविनोद

मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

तेजः + मय = तेजोमय

यशः + वर्धन = ~~मराल~~ यशोवर्धन

पयः + धि = पयोधि
(धारण करने वाला)

पयः + घट = पयोघट

यशः + भूमि = यशोभूमि

मनः + वेग = मनोवेग

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

तेजः + मुर्ति = तेजोमुर्ति

तेजः + मय = तेजोमय

नवः + मंडल = नवोमंडल

अमिय → अमृत

रत्नाकर, पयोदी → समुद्र

निधि → भंडार

मराल = हंस

③ यदी आगे घोष न आकर ~~अघ~~ अघोष आ जाता है तो 'अः' परिवर्तित नही होता है।

प्रातःकाल = प्रातः + काल

अधःपतन = अधः + पतन

सांयःकाल = सांयः + काल

मनःकामना = मनः + कामन

पयःपान = पयः + पान

अंतःकरण = अंतः + करण

अंतःक्रिया = अंतः + क्रिया

(4) विसर्ग के पूर्व 'अ' 'आ' को छोड कर को अन्य स्वर हो तथा बाद मे कोई घोष ध्वनी आ जाए तो विसर्ग 'र्' मे परिवर्तित हो जाता है।

आशी: + वचन = आशीर्वचन

आशी: + वाद = आशीर्वाद

धनु: + धर = धनुर्धर

आवि: + भाव = आविर्भाव

बहि: + गमन = बहिर्गमन

ज्योति: + मय = ज्योतिर्मय

ज्योति: + पुंज = ज्योतिर्पुंज

प्रादु: + भूत = प्रादुर्भूत

बहि: + भाग = बहिर्भाग

अपवाद :

स्व: + ग = स्वर्ग

'अ' के आने पर भी 'र्' बना

(5) विसर्ग के पूर्व यदी 'अ'/'आ' हो और फिर तालव्य ध्वनि आ जाए तो 'श' का आगमन हो जाता है।
विसर्ग का लोप होकर

तप: + चर्या = तपश्चर्या

(i) अ/+आ : + तालव्य + अघोष = श

तालव्य अघोष → च छ

मन: + चेतना = मनश्चेतना

क: + चित = काश्चित

~~मन: + ताप~~ = ~~मनस्ताप~~ ✓ ~~मनश्ताप~~ ✗

~~धनु~~ मन: + चिकित्सा = मनश्चिकित्सा

वर्ग

क → कण्ठ्य

च → तालव्य

ट → मूर्धन्य

त → दंत्य

प → ओष्ठ्य

(ii) अ/आ : + मूर्धन्य अघोष = ष् ट ठ

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

(iii) अ/आ : + दंत्य अघोष = स् त थ

नमः + ते = नमस्ते

चतुः + सीमा = चतुस्सीमा

6) (i) विसर्ग के पहले अ/आ हो तथा विसर्ग के बाद क, प, म हो तो वह 'स्' में परिवर्तित हो जाता है।

नमः + कार = नमस्कार

भाः + कर = भास्कर

भाः + पति = भास्पति

वाचः + पति = वाचस्पति

परः + पर = परस्पर

श्रेयः + कर = श्रेयस्कर

पुरः + कृत = पुरस्कृत

(ii) इ/ई : + क प म = ष्

आविः + कार = आविष्कार

चतुः + कोण = चतुष्कोण

चतुः + पद = चतुष्पद

बहिः + कृत = बहिष्कृत

बहिः + कार = बहिष्कार

महत्वपुर्ण संधि शब्द :

विश्व + मित्र = विश्वामित्र

दीन + नाथ = दीनानाथ

मार्त + अण्ड = मार्तण्ड

मनस् + ईष = मनिष

उत्तर + खण्ड = उत्तराखण्ड

सार + अंग = सारंग

सिमा + अंत = सिमंत / सिमांत

नाक + कटा = नकटा

फूल + वाड़ी = फूलवारी

घोड़ा + सवार = घुड़सवार

पानी + हारिरी = ~~पानीहारी~~ ~~पनीहारी~~ ~~पनी~~ पनिहारी

उन + साठ = उनसाठ

मुसल + धार = मुसलाधार

पानी + घाट = पनघट

आठ + अन्नी = अठन्नी

छोटा + भैया = छुटभैया

उन + सत्तर = उनहत्तर

संज्ञा

→ संज्ञा शब्द सम् + ज्ञा के योग से बना है, जिसका अर्थ है सम्यक ज्ञान कराने वाली।

→ संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है - नाम

→ जो शब्द किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, भाव या प्राणी के नाम का बोध कराए उन्हें हम संज्ञा ~~कहला~~ कहेंगे।

eg. भूख (भाव), कमल (नाम), उदयपुर (स्थान), मेज (वस्तु), मलाई (भाव)

प्रकार

→ व्यक्ति वाचक → भाव वाचक

→ जाति वाचक
- द्रव्यवाचक पदार्थ
- समूह वाचक

व्यक्ति वाचक :-

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या प्राणी विशेष के नाम का बोध कराते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण : उदयपुर, कामधेनु

व्यक्ति विशेष → राम, श्याम

स्थान विशेष → उदयपुर, जयपुर, हिमालय

वस्तु विशेष → मेज, पंखा

जाती वाचक :

जिन संज्ञाओं से एक जाती के अंतर्गत आने वाली सभी वस्तुओं का व्यक्तियों का या प्राणीयों का बोध होता है।

उदाहरण → गाय, कुत्ता, लड़का, पक्षी
↓
इसमें सभी जगह की गाय आ जाती है।

नदी → इसके अंतर्गत सभी नदी आ जाती है।
गंगा, यमुना

आधुनिक मान्यताओं के आधार पर द्रव्यवाचक और समूह वाचक संज्ञाओं के जातिवाचक संज्ञा में रखा जाता है।

विशेष → यदी कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयोग होती है तो वह जातिवाचक संज्ञा कहलाती है।
उदाहरण → जनता में जयचन्द बढ़ रहे हैं।

द्रव्यवाचन :
जिन संज्ञाओं से ठोस, तरल या धातु अर्थात का बोध हो तो उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
उदाहरण → तेल, सब्जी, सोना, चांदि

समूहवाचक संज्ञा →
जहाँ एक से अधिक का समूह होता है वहाँ पर समूहवाचक संज्ञा होती है। जो किसी समुदाय का बोध कराए।
eg: कक्षा, सेना, मंडली, परिवार, संसद, काफिला

है व हैं
वह जाता है।
वे जाते हैं।
वह खाता है।
वे खा रहे हैं।

भाववाचक
किसी भाव अवस्था गण या दशा के नाम को भाववाचक कहते हैं। अर्थात जिन संज्ञाओं से पदार्थों के या व्यक्तियों के धर्म, गुण, दोष आकार अवस्था, चेष्टा आदि भाव जाने जाएं वे भाववाचक संज्ञा होती है।

भाववाचक संज्ञाएँ अनुभव अनुभव जनवीय होती हैं।

उदाहरण → क्रोध, प्रेम, बिमारी, बचपन, मिठास, लम्बाई

भाववाचक संज्ञा का निर्माण :-

① जातिवाचक संज्ञा द्वारा

मनुष्य से बना मनुष्यता

कुमार से ~~कौमारीय~~ कौमार्य

गुरु से गौरव

चिकित्सक से चिकित्सा

हिन्दू से हिन्दुत्व

भाई से भाईचारा

② सर्वनाम से -

अहम् से अहंकार

अपना से अपनत्व

निज से निजता

③ विशेषण -

आलसी से आलस्य ← भाव

प्यासा से प्यास

भूखा से भूख

सुंदर से सौन्दर्य

④ क्रिया से भाववाचक का निर्माण

उड़ना से उड़ान

गिनना से गिनती

कमाना से कमाई

छोड़ना से छुट

वे शब्द लिंग, वचन तथा कारक के आधार पर परिवर्तित नहीं होते हैं। वे अविकारी होते हैं।

विशेष : अव्यय से भाववाचक संज्ञा का निर्माण।

अविकारी शब्द

बहुत से बहुतायत

क्रिया विशेषण ← शीघ्र से शीघ्रता

तेज से तेजी

भितर से भितरी

नोट → संज्ञा सर्वनाम विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

सर्वनाम : सर्वनाम शब्द का अर्थ है सब का नाम। वाक्य मे संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम संज्ञाओं की पुनरावृत्ति को रोक कर वाक्य को सौंदर्य युक्त बनाता है।

उदाहरण : पेड़ पौधे (संज्ञा) पर्यावरण को संतुलित बनाए रखते हैं। (सर्वनाम) वे विभिन्न जिवों को आश्रय प्रदान करते हैं। (सर्वनाम) उनसे (सर्वनाम) हमें (मानव समूह) फल - फूल आदि प्राप्त होते हैं।

मौलिक सर्वनाम :-

मैं, तु, आप, यह, वह, कौन, जो, सो
क्या, कोई, कुछ

जब इन पर कारक चिन्हों का प्रभाव पड़ता है तब ये योगिक बन जाते हैं।

योगिक सर्वनाम :- मैंने, मुझे, मुझको, हम, हमको, मेरा, मेरी, मेरे,

सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं।

1. पुरुषवाचक → जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाले, सुनने वाले या अन्य किसी व्यक्ति के स्थान पर किया जाता है। सर्वनाम का अपना कोई लिंग नहीं होता है। जैसे मैं जाना चाहता हूँ। जाना चाहता हूँ।

तीन भेद होते हैं :

उत्तम (मैं), मध्यम (तुम), अन्य (वह)

उत्तम : जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने या लिखने वाला स्वयं के लिए करता है। जैसे हम, मैं

मध्यम पुरुषवाचक : जिस सर्वनाम से श्रोता का बोध होता है। जैसे तु, तुम, आप, तुझे, तेरा।

अन्य : जिस सर्वनाम से अन्य व्यक्ति का बोध हो। अर्थात जिसके सम्बन्ध मे बात कि गई हो। वह, वो, उसे।

गोपाल ने राम से कहा की सिता कि मा रही है। वह भी साथ चलेगी?

निश्चय वाचक : जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु को बोध होता है। (संकेत वाचक)

जैसे → यह, उस, ये, वह, वे

यह मेरी पुस्तक है।

वह साँप है।

उस लड़के को बुला लाओ।

यह → जो पास है उसके लिए। बहुवचन → ये

वह → जो दूर है उस के लिए। बहुवचन → वे

अनिश्चय वाचक : जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति या वस्तु का निश्चित बोध नही होता है।

जैसे: कोई बोल रहा है।

वह कुछ खा रहा है।

किसी ने कहा था।

प्रश्नवाचक : वे सर्वनाम जो प्रश्न का बोध कराते या वाक्य को प्रश्नवाचक बना देते है।

जैसे :- कल कौन आया था?

वह क्या लाया?

किसकी पुस्तक पड़ी है?

जिस सर्वनाम से एक शब्द या वाक्य का दूसरे शब्द या वाक्य से सम्बन्ध जाना जाता है है। (15)

जैसे जो जागेगा सो पावेगा (पुरानी हिन्दी)

जो जागेगा वह पावेगा (आधुनिक हिन्दी)

जितना घूंड डालोगे उतना मीठा होगा।

यह वही लड़का है जो कल आया था।

निजवाचक सर्वनाम: निजवा जिस सर्वनाम का प्रयोग कर्ता कारक स्वयं के लिए करता है। इसे निजवाचक कहते हैं।

मैं आप ही चला जाऊँगा।

अपना खाना बना रहा हूँ।

तुम अपनी पुस्तक ~~पढ़ो~~ पढ़ो।

विशेषण :

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है वो विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है। और जिन शब्दो की विशेषता बताई जाती है उन्हे विशेष्य कहते है।

उदा. → सुन्दर पुरुष
विशेषण विशेष्य
कुछ पुस्तके

विशेषण न सिर्फ विशेषता बताता है बल्की वह अपने विशेष्य की संख्या व परिमाण भी बताता है।

जैसे पाँच लड़के खेल रहे है।
विशेषण विशेष्य

भेद : (प्रकार)

1. गुणवाचक : वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, स्वाद, आकार, स्पर्श, स्थान, समय, दिशा, दशा या अवस्था इत्यादी का बोध कराते है उन्हे गुणवाचक विशेषण कहते है।

① गुण : उदार, दयालु, मेहनती आदी
② दोष : झुठा, कपटी, पापी, बेईमान
③ रंग : गुलाबी, लाल

(4) स्वाद : ~~मीठा~~ मीठा, नमकीन

(5) स्पर्श : मुलायम, कोमल, चिकना

(6) आकार : आयताकार, वृत्ताकार, मोटा, पतला,

(7) स्थान : जयपुरी, भारतीय, फ्रांसीय

(8) समय : मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक, दैनिक, सुबह

(9) दशा : रोगी, गीला, सुखा

4. गंध बोधक : खुशबूदार सुगंधित

गुण वाचक विशेषणों में से कुछ विशेषण खास विशेष्यों के साथ प्रयुक्त होते हैं।
जैसे चिलचिलाती धूप
बल खाती नागिन
इसे विशेषण पद वाचक विशेषण कहलाते हैं।

2. संख्या वाचक : वे विशेषण जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित, अनिश्चित संख्या, क्रम, या गणना का बोध कराते हैं। उन्हें संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। ये भी 2 प्रकार के होते हैं।
(i) निश्चित संख्यावाचक
(ii) अनिश्चित संख्या वाचक

(i) निश्चित वाचक :
जो शब्द निश्चित संख्या का बोध कराते हैं।
(क) गणना वाचक - ~~पहला, दूसरा~~ एक, दो, तीन
(ख) क्रम वाचक - पहला, दूसरा
(ग) आवृत्ति वाचक - दुगना, चौगुना
(घ) समुदाय वाचक - दोनों, तीनों, चारों

(ii) अनिश्चित संख्या वाचक :

जो शब्द निश्चित संख्या का बोध नही कराते है।

जैसे :- 2-3 आम
बीसों कमरें
कुछ किताबे

3) परिमाण वाचक :

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा, या तौल का ज्ञान कराते है।

2 भेद :

(i) निश्चित (ii) अनिश्चित

↓ ↓

2 मीटर कपड़ा — जरासा नमक
आधा बीघा जमीन — ढेरों आम
बिसों किलोमीटर

4) सार्वनामीक या संकेत वाचक :

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दो की ओर संकेत करते है। इन्हे संकेतवाचक या सार्वनामीक विशेषण कहते है। इसमें सर्वनाम शब्दों के तुरन्त बाद संज्ञा का प्रयोग होता है।

जैसे :- यह गाय बहुत दूध देती है।
↑ संकेतवाचक

वह गधा भागा जा रहा है।
यह घर मेरा है।
कोई आदमी रो रहा है।

कोई रो रहा है। → सर्वनाम है।

5) व्यक्तिवाचक सर्वनाम :-

वे विशेषण जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने।

जैसे :- जोधपुरी जूती

बनारसी साड़ी

इसे सामान्यतया गुणवाचक विशेषण में सामील किया जाता है।

विशेषण के ~~विशेषताएं~~ अवस्थाएं :

(1) मूलावस्था (2) उत्तरावस्था (3) उत्तमावस्था

(1) मूलावस्था :

जिसमें किसी संज्ञा या सर्वनाम की सामान्य स्थिति का बोध होता है।

जैसे रहीम अच्छा लड़का है।

(2) उत्तरावस्था :

जिसमें दो संज्ञा या सर्वनाम की तुलना की जाती है। जैसे अशोक रहीम से अच्छा है।

प्रशांत अभिषेक से श्रेष्ठतर है।

(3) उत्तमावस्था :

जिसमें दो से अधिक संज्ञा या सर्वनाम की तुलना करके एक को सबसे अच्छा या बुरा बताया जाता है।

जैसे : अकबर सबसे अच्छा है।

राम श्रेष्ठतम है।

पंकज सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी है।